

सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीति अपार्टमेंट, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज, दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2025-26

कक्षा:-8

विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक

पाठ:10

मौखिक कौशल

1. मनुष्य जब प्रकृति के पास जाता है तब मनुष्य और प्रकृति का सान्निध्य स्थापित हो जाता है।
2. लेखक के द्वारा जान जोखिम में डालकर जंगली जानवरों को देखने में जिंदगी का कीमती समय बर्बाद करने के कारण लोग उनकी आलोचना करते हैं।
3. मानवता प्रकृति की संतान है क्योंकि हम वास्तव में प्रकृति के ही बालक हैं।
4. शहरी लोग बालिशत भर जमीन में बगीचा बनाकर या दो -चार पौधे लगाकर प्रकृति से मेल साधते हैं।

लिखित कौशल

1. (क) शहरी जीवन और कृत्रिम दुनिया खड़ी करके मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है।
(ख) हिमालय पर रहने वाले मनुष्यों और जानवरों का जीवन- क्रम काफी विषम परिस्थितियों से होकर गुजरता है इसलिए लेखक उन्हें देखकर दुखी होते हैं।
(ग) लेखक स्वयं को पेड़-पत्तों और पशु-पक्षियों में से ही एक प्राणी मानते हैं। जब कृत्रिम दुनिया उनके लिए असह्य हो जाती है तब वे जंगल के प्राकृतिक वातावरण में ही रहना चाहते हैं।
(घ) लेखक मसूरी में पहाड़ के शिखरों के बीच बादल बनकर व्योम-विहार करना चाहते हैं।

(ड) लेखक बादलों की शक्तियों के बारे में बताते हैं कि बादल देखते ही देखते अपना आकार, स्वरूप एवं अपना गठन बदलते रहते हैं। ये आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, दसों दिशाओं में दौड़ते, फूलते और पिछलते हैं। क्षणभर में में अपना रंग बदल लेते हैं।

(च) जब पेड़-पत्ते हमसे बात करने लगे, जंगल के पशु-पक्षी हमारे साथ आत्मीयता महसूस करने लगे तथा हम प्रकृति के बीच बालक जैसे दिखाई दें तब हम कह सकते हैं कि हमने प्रकृति से संपर्क साध लिया है।

2. (क) लेखक चिन्दी बाले पत्थरों को हाथ में लेकर भूगोल शास्त्र की सहायता से उनके जन्म के बारे में पता लगाते थे। अर्थात् वे कब अस्तित्व में आए, इससे परिचित होते थे।

(ख) इन पंक्तियों में लेखक के कहने का भाव यह है कि जिस प्रकार हम 'हैवानियत' शब्द तिरस्कार के रूप में प्रयोग करते हैं उसी प्रकार पशु-पक्षी 'आदमियत' शब्द का प्रयोग करते होंगे और उसी में मनुष्य के साथ रहकर उन्होंने जो बुरा अनुभव झेला उसे व्यक्त करते होंगे। अर्थात् मनुष्य के साथ उनका अनुभव अच्छा नहीं रहा है।

3. (क) प्राणी (ख) बालक (ग) विश्व (घ) शिखर (ङ) आदर्श (च) गुच्छपानी, सहस्रधारा (छ) अकुलाना

मूल्यपरक प्रश्न

1. बादल परिवर्तन से परेशान नहीं होते वे अपना आकार, स्वरूप तथा अपना गठन बदलते रहते हैं। वे आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, दसों दिशाओं में दौड़ते हैं। कभी पानी से भरकर फूलते हैं और कभी पिघल जाते हैं अर्थात् बरस जाते हैं। उनका रंग भी पल-पल बदलता रहता है। वे इन परिवर्तनों का आनंद लेते हुए अंत में मिट जाते हैं इसी को वे अपने जीवन की साधना मानते हैं।

2. प्रकृति मानव जीवन का आधार है क्योंकि मानव की सभी जरूरतों को प्रकृति ही पूरा करती है। मानव को रहने, खाने-पीने की चीजें प्रकृति से ही मिलती हैं।